यीशुः स्वर्ग में जीवित

(शाऊल/पौलुस की गवाही)

ग्यारह प्रेरितों को जी उठे मसीह द्वारा उनके ''अविश्वास और मन की कठोरता'' (मरकुस 16:14) के कारण व्यक्तिगत रूप से डांट पड़ी थी, परन्तु इससे उनमें अचानक एक बदलाव आ गया था। उनका पूर्ण विश्वास था कि यीशु की लोथ चलती और बातें करती है जैसे वह सचमुच में जीवित हो और अपने इस नये विश्वास के कारण वे शहीद हो गए थे।

उनके साथ ''अधूरे दिनों का जन्मा'' (1 कुरिन्थियों 15:8) एक व्यक्ति भी है जो पहले मसीह का नाम धारण किए किसी भी व्यक्ति को बहुत सताता, धमकाता और उसकी हत्या तक कर देता था (प्रेरितों 8:1; 9:1, 2; 22:4, 5; 26:9-11)। पौलुस ने यीशु को जी उठने के बाद चालीस दिन तक पृथ्वी पर नहीं देखा था, परन्तु एक रिपोर्ट के रूप में उसकी कहानी अविश्वसनीय है कि एक लाश जीवित हो गई थी। उसका दावा था कि उसने यीशु को आकाश में अन्धा करने वाले प्रकाश में देखा और बातें करते सुना था (प्रेरितों 9:3-6; 22:6-11; 26:13-18)।

यदि पौलुस ने सचमुच यीशु को देखा और बातें करते सुना था तो यीशु मरा नहीं था अर्थात वह कब्र में से जी उठकर स्वर्ग में जा चुका था। यदि कथित स्वर्गीय दर्शन को प्रमाणित किया जा सकता हो, तो एक अविश्वासी की ओर से मिला यह सशक्त प्रमाण यीशु के पुनरुत्थान का समर्थन करता है। एक लाश के फिर से जी उठने की बात का स्वर्गीय दर्शन बेतुका और अतर्कसंगत लगता है। क्या पौलुस के दावे की कोई प्रामाणिकता है?

एक भ्रम?

क्या पौलुस भ्रम का शिकार था? जब तक यह स्मरण नहीं किया जाता कि पौलुस कितना दृढ़ निश्चयी और कठोर चित्त वाला व्यक्ति था तब तक ऐसा ही लगता है। मनोवैज्ञानिक कहते हैं कि भ्रम सामान्यत: किसी के सुझाव से होता है। परन्तु इस घटना में पौलुस के दिमाग में किसी भी प्रकार का सुझाव यीशु को देखने के विपरीत ही होगा। वह यीशु के नाम से भी घृणा करता था, उसे एक धोखेबाज़ व्यक्ति मानता था और यीशु के अनुयायियों को ढूंढ़ ढूंढ़कर बांधने, बन्दी बनाने और उनकी हत्या करने के लिए जा रहा था। नहीं, मनोवैज्ञानिक रूप से पौलुस का यीशु को देखने का कोई विचार नहीं था। पौलुस के मामले

में विश्वास करने के अनुभव की बात का कोई अर्थ नहीं है।

मानसिक संतुलन?

यदि दमिश्क के मार्ग के पौलुस के अनुभव को मन का धोखा या सुझाव की शक्ति न कहा जाए तो क्या अधिक विद्या ने उसका दिमाग खराब कर दिया था? फेस्तुस का निष्कर्ष तो यही था (प्रेरितों 26:24)। एक पागल आदमी का संसार की सबसे बढ़िया तेरह-चौदह पुस्तकें लिखना बुद्धिमान लोगों के विषय में अच्छा संकेत नहीं देता! ऐसे किसी मानसिक रोग के बारे में सुना नहीं है जो यीशु के बाद किसी और व्यक्ति को सही जीवन जीने की प्रेरणा देता हो। यदि फेस्तुस सही था, तो हमें ऐसे और पागलों की आवश्यकता है! दिन के प्रकाश में राजमार्ग पर कथित दर्शन को जो भी कहा जाए, परन्तु पौलुस के मामले में सनकी दिमाग कोई वैध विकल्प नहीं है।

एक मसीही धोखा?

जो कुछ पौलुस ने देखा था यदि भ्रम और पागलपन उसकी कोई तर्कसंगत व्याख्या नहीं है, तो फिर तर्कसंगत क्या है? क्या पौलुस मसीही लोगों के धोखे में आ गया था? मसीही लोगों के विरुद्ध ऐसा सुझाव भी उनका अपमान होगा, क्योंकि वे किसी को धोखा नहीं देते थे। उनका लक्ष्य उसके पीछे चलना था जिसने सत्य होने का दावा किया था (यूहन्ना 14:6)।

फिर, यदि कोई मसीही पौलुस को गुमराह करने का प्रयत्न भी करता तो इस हठी ने उसकी बात पर ध्यान नहीं देना था। उसने स्तिफनुस पर पथराव करने वालों के कपड़ों की रखवाली की थी, और दूसरे मसीहियों के मारे जाने का भी गवाह था। इसके अतिरिक्त, उस कथित घटना के घटित होने के समय पौलुस के साथ कोई मसीही नहीं था।

जान बूझकर बोला गया झूठ?

क्या यह मानने में आता है कि पौलुस ने एक स्वर्गीय दर्शन की कहानी स्वयं ही गढ़ ली हो। जब कोई इस बात पर विचार करता है कि पौलुस को झूठ बोलने के कारण क्या खोना पड़ा था तो वह तुरन्त इस थ्योरी से पीछे हट जाता है: (1) उसका भविष्य खत्म हो गया था। मसीही बनने से पहले वह इस्राएल में अपने प्रसिद्ध शिक्षक गमलीएल की तरह एक प्रसिद्ध रब्बी बनने वाला था। मसीही बनकर, उसने उस अवसर को गंवा दिया। (2) अपने परिवार और इस्राएल में अपने सम्बन्धियों से, जिनसे वह बहुत प्रेम करता था, उसके सम्बन्ध खराब हो गए थे (रोमियों 9:1-3; देखिए 10:1, 2)। (3) अब उसका जीवन सुखमय नहीं था, क्योंकि जो पहले सताता था अब वह स्वयं उसी कारण के लिए सताया जा रहा था, जब तक कि अन्त में वह शहीद नहीं हो गया।[1] नहीं, दमिश्क के मार्ग की घटना झूठी होने की व्याख्या संतोषजनक नहीं हो सकती।

मसीह से सामना ?

ऊपर दिए गए चार विकल्पों के अतिरिक्त लोग अन्य विकल्प भी खोजते रहते हैं, परन्तु उन्हें पता चलता है कि दूसरा विकल्प केवल यही है कि पौलुस ने जो कुछ हुआ उसके बारे में बिल्कुल सही कहा था। सर जॉर्ज लिटलटन (1709-73) को पहले लगता था कि पौलुस की गवाही एक हास्यास्पद कहानी के रूप में है। उसने लिखा था:

> [प्रेरित पौलुस] या तो एक धोखेबाज था, जिसने धोखा देने की नीयत से वह कहा जो उसे पता था कि झूठ है; या वह एक उमंगी व्यक्ति था जो अपनी कल्पना के वश में हो गया था; या वह दूसरों के धोखे में आ गया था, और जो कुछ भी उसने कहा उस सब को धोखे की शक्ति कहा जाना चाहिए; या जिसे उसने अपने मनपरिवर्तन का कारण और इसका परिणाम बताया, सचमुच में वैसा ही हुआ था; और इसलिए मसीही धर्म एक ईश्वरीय प्रकाशन है।[2]

पूरी तरह से पौलुस के जीवन और उसकी बातों की जांच और हर व्याख्या करने के बाद, लिटलटन ने निष्कर्ष निकाला कि जो कुछ पौलुस ने बताया था, वह सत्य है।

सारांश

पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं के लिए मसीहा के पृथ्वी पर उतरकर आने के बारे में जानने के लिए इतनी सारी विस्तृत बातों के लिए चमत्कारिक ज्ञान आवश्यक था। उनकी भविष्यवाणियां उसके आने से सैकड़ों वर्ष पूर्व लिखित रूप में दर्ज हो चुकी थीं।

वास्तव में मसीह होने का दावा करने वाले एक व्यक्ति का जन्म अगस्तुस कैसर (31 ई.पू.-14 ई.) के समय बैतलहम में हुआ था और राज्यपाल पोंतुस पीलातुस ने अपने शासनकाल में उसके मरने की पुष्टि की थी।

उसके दावे की पुष्टि के रूप में उसके प्रसिद्ध आश्चर्यकर्मों के अतिरिक्त, उसके जीवन के ढंग से भी उसकी सच्चाई प्रमाणित हुई। वह दीनता में लिपटा हुआ था, दूसरों के लिए जीने में नि:स्वार्थ था और अपने पिता की इच्छा को पूरा करने के सिवाय उसकी कोई अपनी निजी महत्वाकांक्षा नहीं थी। यीशु की तरह कोई व्यक्ति बातें नहीं कर पाया, और न ही कभी भी कोई व्यक्ति उसके जैसा जीवन जी पाया है। लोगों के लिए ईश्वरीय होने के सम्बन्ध में, उसका चरित्र वैसा ही था जैसे परमेश्वर के चरित्र की अपेक्षा की जा सकती थी।

कुछ अविश्वासी इस बात को पूरे मन से मानने लगे थे कि क्रूस पर चढ़ाया गया यीशु जीवित हो गया है और मृत्यु का उस पर कोई अधिकार नहीं रहा है। उनका यह मानना अचानक हुआ और यह उनके लिए इतना दृढ़ और अर्थपूर्ण था कि वे अपने उस तेजोमय पूर्ण विश्वास के प्रचारक बन गए थे। जो कुछ उन्होंने प्रचार किया उसे उन्होंने सुसमाचार अर्थात ''शुभ समाचार'' का नाम दिया। उन्होंने हज़ारों लोगों को अपने इस विश्वास को मानने के लिए समझाया कि परमेश्वर आया था और देह बनकर मनुष्यों के बीच रहा था।

पाद टिप्पणियां

[1]पढ़िए प्रेरितों 9:23, 29; 14:19; 16:23; 21:13, 30; 23:13; 2 तीमुथियुस 4:7, 8. [2]*लॉर्ड लिटलटन ऑन द कन्वर्शन ऑफ सेंट पॉल एण्ड गिलबर्ट वैस्ट ऑन द रिज़र्रक्शन ऑफ जीज़स क्राइस्ट* (न्यू यार्क: अमेरिकन ट्रेक्ट सोसायटी, 1929), 468.

यीशु की ईश्वरीयता और बाइबल की प्रेरणा

यदि प्रमाण से यीशु की ईश्वरीयता प्रमाणित हो जाती है, तो बाइबल स्वत: ही ईश्वरीय रूप में स्थापित हो जाती है। यह सत्य है क्योंकि यीशु ने पुराने नियम का अनुमोदन किया और उसके अधिकार से उसके चेलों ने नया नियम लिखा। यदि उनकी बातें अविश्वसनीय हैं, तो यीशु की कहानी ठहरती नहीं है। परन्तु, यदि यीशु की कहानी इन लोगों द्वारा नहीं बनाई जा सकती थी, और यदि वे यीशु की कहानी बना सकते और ऐसा करने का षड्यन्त्र करने वाले लोग नहीं थे, तो यीशु की ईश्वरीयता को बल मिलता है। यदि यीशु ईश्वरीय है तो नये नियम की पुस्तकें भी जो उसके अधिकार से लिखी गई थीं, ईश्वरीय प्रेरणा से ही हैं।